आईआईटी बीएचयू में शुक्रवार को हुए आठवें दीक्षांत समारोह में ग्रुप फोटोग्राफी के समय स्वर्ण पदक विजेता मेधावी छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। (बाएं) तथा (दाएं) दीक्षांत समारोह को संबोधित करते मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'।

आईआईटी बीएचयू के आठवें दीक्षांत समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री ने 1282 को दीं उपाधियां, 54 को पदक-पुरस्कार

नये भारत का आधार बनेगी नई शिक्षा नीति

घोषणा

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा है कि नई शिक्षा नीति नए भारत का आधार बनेगी। शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में देश को शिखर पर ले जाएगी। यह भारत केंद्रित और परिणाम आधारित होगी।

आईआईटी बीएचयू के आठवें दीक्षांत समारोह में शुक्रवार को निशंक ने कहा कि इस नीति में अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण, नवाचार रोजगार, कौशल विकास, जीवन मूल्य, संस्कृति समेत सभी क्षेत्रों में देश को आगे ले जाने की संभावनाएं हैं। नई शिक्षा नीति को लेकर पूरी दुनिया में उत्सुकता है। दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले युवाओं से कहा कि वे नए भारत का चेहरा हैं। यहां से आगे निकलने पर चुनौतियां ही चुनौतियां है। चुनौतियों में ही अवसर छिपे होते हैं। उन्हें खोजने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि युवाओं को इतना परिश्रम करना होगा कि पूरी दुनिया में भारत नौकरी देने वाला देश बन जाए। पांच ट्रिलियन डॉलर की इकोनामी बनाने का लक्ष्य पूरा करनें में युवाओं की भूमिका प्रमुख है। आईआईटी से निकलने वाले प्रत्येक छात्र के चेहरे पर भारत का भविष्य नजर आना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईआईटी के निदेशक प्रमोद जैन व संचालन कुलसचिव डॉ. एसके माथुर ने किया।

उपाधियां प्राप्त करने के बाद स्वतंत्रता भवन के बाहर पुराने दोस्त मिले तो सफलता की सुगंध से पुरानी यादें गमक उठीं।

देश की समस्याओं के समाधान में करें ज्ञान का उपयोग

निशंक ने कहा कि छात्र अपने ज्ञान का उपयोग देश की समस्याओं का समाधान करने में करें। पर्यावरण, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वास्थ्य, जल शक्ति आदि ऐसे क्षेत्र है, जहां अधिक काम करने की जरूरत है। आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस जैसे कई क्षेत्र हैं, जिसमें काम करने के पर्याप्त अवसर हैं। ह्यमेक इन इंडियाह्ल के सपनों को साकार करने की जिम्मेदारी युवाओं के कंधे पर है।

स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया का लाभ लें

मानव संसाधन विकास मंत्री ने भारत सरकार की विभन्न योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि स्किल इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया जैसे योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। बीएचयू की स्थापना और महामना मदन मोहन मालवीय को याद करते हुए उन्होंने कहा कि यहां यह विश्वविद्यालय देश में ही नहीं पूरी दुनिया में श्रेष्ठ है। यहां पर पढ़ने वालों को लोग उम्मीद से देखते हैं। उन्हें लगता है कि इस छात्र में औरों से कुछ अलग होगा। विषम और विपरीत परिस्थितयों में महामना ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसलिए यहां से निकलने वाले विद्यार्थी के सामने को अपने को शीर्ष पर ले जान की चुनौती है।

दीक्षांत में नौ स्वर्ण समेत 14 पदक प्राप्त करने वाले विभोर बंसल को उपाधि प्रदान करते मानव संसाधन विकास मंत्री। साथ में हैं निदेशक प्रो. पीके जैन। • हिन्दुस्तान

उल्लास, उमंग और उत्साह के दिखे विविध रंग

वाराणसी। बीएचयू के स्वतत्रंता भवन के सभागार में शुक्रवार को युवाओं के उल्लास और उत्साह के विविध रंग दिखे। दीक्षांत समारोह में शामिल होने के दिन का इंतजार समाप्त हो गया। सुबह 9 बजे से छात्र-छात्राओं के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था। छात्र और शिक्षक भारतीय परिधान में थे। दस बजे के पहले ही ज्यादतर ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया। करीब 10 .50 बजे शैक्षिक शोभायात्रा ने हाल में प्रवेश किया, तो सभागार में शांति छा गई। सभी ने अपने स्थान पर खड़े होकर स्वागत किया। कुलगीत और पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के पौराणिक मंगलाचरण के बाद दीक्षांत समारोह की औपचारिक शुरुआत हुई। उपाधियां बांटने का क्रम आरंभ हुआ। सर्वाधिक नौ स्वर्ण पदक पदक पाने वाले विभोर बंसल मंच पर आए, लोगों ने देर तक तालियां बजा कर उनका स्वागत किया। सभागार में मौजूद हजारों लोग इस अविस्मरणीय क्षण को अपने कैमरों कैद कर रहे थे। किसी छात्र का नाम पुकारे जाने पर वहां मौजूद उसके अभिभावक भी गर्व से खड़े हो जाते। छात्रों ने डिग्री लेने के बाद गुरुजनों का पैर छूकर आशीर्वाद भी लिया। स्वतंत्रता भवन के बाहर उल्लास ही उल्लास था। पढ़ाई समाप्त करने के कई महीने बाद मिल रहे दोस्त आपस में गर्मजोशी के साथ मिले।

बोले मेधावी

मैंने कभी सोचा नहीं था कि प्रेसीडेंट मेडल के लिए चुना जाऊंगा। सुबह अखबारों में पढ़ा तो विश्वास ही नहीं हुआ। अच्छा लग रहा है कि मेहनत का फल मिला। युवाओं को पढ़ाई के साथ एकस्ट्रा करिकुलर एक्टीविटीज में भी हिस्सा लेना चाहिए। आईआईटी बीएचयू का माहौल इस मामले में काफी सहायक है। यहां के एल्युमिनाई नेटवर्क का फायदा दूसरे छात्रों को मिलता है।
- श्रुति राजलक्ष्मी, प्रेसीडेंट गोल्ड मेडल

डांस करते-करते मुझे मेडल मिल जाएगा, यह मैंने कभी सोचा नहीं था। मुझे सोशलवर्क और दूसरी गतिविधियों में बेहतर करने के लिए डायरेक्टर गोल्ड मेडल मिला। मैं आईआईटी के सोशल क्लब का सेक्रेटरी था। इस दौरान कई एक्टीविटीज हुई। मैंने डार्सिंग, क्विजिंग, डिबेट सभी में भाग लिया। मुझे खुशी है कि आज उसी की बदौलत डायरेक्टर गोल्ड मेडल चुना गया।
- साई पवन एसएन, डायरेक्टर गोल्ड मेडल

मैं हनुमानगढ़ (राजस्थान) का रहने वाला हूं। एक साथ इतने पदक देख कर क्या फीलिंग हुई, आप समझ नहीं सकते। स्कूल के समय कभी-कभार पदक मिला था। जितनी उम्मीद थी, उसे कहीं ज्यादा मिल गया। इस समय मैं माइक्रोसॉफ्ट बेंगलुरु में काम कर रहा हूं। आजकल गलाकाट प्रतिस्पर्धा है। इसके बावजूद कुछ अलग करने के लिए समय निकालना चाहिए।
- विभोर बसंल, बीटेक, इलेक्ट्रॉनिक

काफी खुश हुई। चार स्वर्ण पदक मिले। आंध्र प्रदेश से आकर आईआईटी बीएचयू में पढ़ने का मौका मिला। काफी कुछ सीखा। यहीं से सीखा मुझे काम दे रहा है। इस समय मैं बेंगलुरु में जॉब कर रहीं हूं।
- एलेश्वरपु श्रावणी, बीटेक, केमिकल

मैं मूल रूप से कोडरमा की रहने वाली हूं। मेरा गोल्ड मेडल मेरे पिता स्व. राजीव वर्मा को समर्पित है। दो साल पहले उनका निधन हुआ। उन्होंने हमेशा मुझे प्रेरित किया। अभी तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों का प्रतिनिधित्व कम है। आईआईटी में उनके लिए सीटें आरक्षित की गई हैं। उसके बावजूद पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है। इसके लिए परिवार के लोगों को माहौल बनाना पड़ेगा।
- आंचल वर्मा, बीटेक, इलेक्ट्रिकल

आज जो खुशी मिली है, वह कभी नहीं मिलेगा। मैं अमेरिका से मेडल लेने आया हूं। मैं इस समय वहीं हायर स्टडी कर रहा हूं। मैं आगे रिसर्च के क्षेत्र में काम करना चाहता हूं। अमेरिका और भारत की पढ़ाई में अंतर यह है कि वहां फंडिंग की कमी नहीं है। मगर वहां गवर्मेंट कोई सपोर्ट नहीं करती है, आपको इंडस्ट्री से पैसा लेना होता है।
- अर्पित भारद्वाज, बीटेक-एमटेक

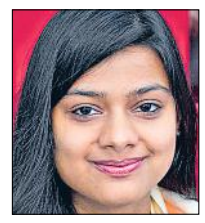

मैं ग्वालियर की रहने वाली हूं। बेंगलुरु में मल्टीनेशनल में जॉब कर रही हूं। पेंटिंग, म्यूजिक और कुकिंग में मेरी खासी दिलचस्पी है। मेरे सफलता का फंडा था कि क्लास को कभी मिस न करो। कहीं कंफ्यूजन हो तो टीचर से जरूर पूछो। पर्सनालिटी की ग्रूमिंग पर ध्यान दो।
- श्रेया माथुर, बीटेक-एमटेक

यहां मेरे एडमिशन के समय मेरे माता-पिता बहुत सशंकित थे कि यूपी के माहौल में पढ़ाई कैसे हो पाएगी मगर आईआईटी बीएचयू में मिले सहयोग ने सभी की धारणा बदल दी। आज भी मैं कोई निर्णय यहां के शिक्षकों से पूछ कर करती हूं।
- अंकिता संजय बुरांडे, एमफार्मा

रायपुर से बीटेक करने के बाद यहां से एमटेक का अवसर मिला। पीएचडी करके मैं टीचिंग में जाना चाहता हूं। मेरे पिता लेखराम वर्मा ही मेरे मोटिवेटर हैं। वह खुद टीचर हैं।
- गुलशन वर्मा, एमटेक, मैकेनिकल

बीएचयू आईआईटी के 75 वर्षीय प्रो. पीसी उपाध्याय अब भी खड़े होकर पढ़ाते हैं। यह मुझे काफी प्रेरित करता है। मैं इस समय आईआईटी दिल्ली से पीएचडी कर रहा हूं। मैं भी उनकी तरह टीचर बनना चाहता हूं।
- अंकित मलिक, एमटेक, मैकेनिकल

संतानों की सफलता ने दिए गौरव के पल

दीक्षांत में प्रेसीडेंट मेडल जीतने वाली श्रुति राजलक्ष्मी के साथ उनके परिजन। • हिन्दुस्तान

दीक्षांत समारोह में बना नया रिकार्ड

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

वाराणसी। आईआईटी बीएचयू के दीक्षांत समारोह में एक नया रिकार्ड बना। यह पहला मौका था, जब एक-एक छात्र को मुख्य अतिथि ने अपने हाथों से उपाधि प्रदान की। इसके लिए वह 11.45 से 1.15 बजे तक खड़े रहे। 1282 को उपाधियां मिलनी थीं। उनमें दस फीसदी नहीं आए। करीब एक हजार छात्रों को मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने उपाधियां दीं। उन्होंने कहा, साढ़े चार घंटे कसरत हुई मगर मुझे प्रसन्नता हुई।

आईआईटी बीएचयू का दीक्षांत समारोह जहां मेधावियों के लिए यादगार रहा, वहीं अभिभावकों के लिए गौरवपूर्ण क्षण था। दीक्षांत समारोह में कई छात्र अपने अभिभावकों के साथ आए थे। उनके लिए अपने बेटे-बेटियों की उपलब्धियों का साक्षी बनने का मौका खास था। कुछ को मुश्किल से ट्रेन में रिजर्वेशन मिला पाया था। डिग्री व मेडल वितरण के समय सबकी आंखो में आंसू छलक आए थे।

मुख्य अतिथि केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने इस बात को नोटिस किया। उन्होंने अपने संबोधन में जिक्र किया कि फोटो लेते समय एक अभिभावक की आंख में आंसू दिख रहे थे। बेटे रचित बग्गा के कंधे पर हाथ रखे उज्जैन से आई रीना बग्गा ने कहा यह उनके लिए काफी गौरवपूर्ण क्षण है। काफी दिनों से सपना देखा था कि बेटे को आईआईटी से डिग्री मिले। रचित ने यहां से इंटीग्रेटेड बीटेक-एमटेक किया। गुड़गांव में नौकरी कर रहे हैं। जब पता चला कि आठ नवंबर को डिग्री मिलेगी तो बनारस आने से अपने को रोक नहीं पाई। उन्होंने कहा कि मैं इस मोमेंट को मिस नहीं करना चाहती थी। मुम्बई से आई मंजुलता अग्रवाल और ओमप्रकाश अग्रवाल की खुशियां छिपायें नहीं छिप रही थी। उनके बेटे रजत अग्रवाल को इंटीग्रेटेड बीटेक-एमटेक में उपाधि मिली है। मंजुलता कहती हैं कि उनके परिवार में कई आईआईटियन हैं मगर यह मौका उनके लिए खास था। प्रेसीडेंट मेडल से सम्मानित श्रुति राजलक्ष्मी की मां प्रीति रानी और पिता आनंद कुमार भी आए थे। अपनी बेटी की इस उपलब्धि पर काफी खुश थे। उन्होंने कहा कि काफी गौरव का एहसास हो रहा है।

डायरेक्टर गोल्ड मेडल पाने वाले साई पवन एसएन के माता-पिता भी हैदराबाद से आए थे। उन्होंने कहा कि उनके बेटे ने यहीं पढ़ाई की। इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल की। यह उनके जीवन की सबस बड़ी कमाई है।

दीक्षांत में डायरेक्टर गोल्ड मेडल पाने वाले साई पवन एसएन के साथ उनके माता-पिता।

गाजीपुर, मिर्जापुर के 365 युवा सफल

छावनी के रणबांकुरे स्टेडियम में शुक्रवार को सेना भर्ती के लिए दौड़ लगाते गाजीपुर और मिर्जापुर के युवक। • हिन्दुस्तान

सेना भर्ती

वाराणसी | निज संवाददाता

सेना भर्ती रैली के आठवें दिन शुक्रवार को गाजीपुर जिले की एक व मिर्जापुर की दो तहसीलों के 365 युवाओं ने दौड़ में सफलता पाई। छावनी स्थित रणबांकुरे मैदान में चल रही रैली के लिए गाजीपुर की कासिमाबाद और मिर्जापुर की सदर और चुनार तहसीलों से 7156 युवाओं ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया था। इनमें 4710 युवा ही दौड़ में शामिल हुए।

रणबांकुरे स्टेडियम में शुक्रवार सुबह सवा छह बजे शुरू हुई दौड़ सवा 11 बजे तक चली। अभ्यर्थियों को 250-250 के अलग-अलग ग्रुपों में दौड़ाया गया। पहले व दूसरे राउंड में कई युवा थक कर बाहर हो गए। कई अभ्यर्थी जोर लगाकर चौथे राउंड तक पहुंचे लेकिन सफल नहीं हो सके।

ढाई सौ से अधिक अभ्यर्थी पांच सेकंड से चूके

वाराणसी। सेना भर्ती के लिए एक से आठ नवंबर तक हुई दौड़ के लिए पहुंचे 38573 अभ्यर्थियों में 3032 ही सफल हो पाए हैं। इनमें 280 अभ्यर्थी पांच सेकंड की चूक से पहली बाधा पार करने में पिछड़ गए। उनमें अपनी तैयारी को लेकर निराशा है। भर्ती निदेशक कर्नल राजेश सिंह ठाकुर ने बताया कि समय रहते अंतिम रेखा न लांघ पाने वाले 30 से 35 युवाओं को रोज बाहर कर दिया जा रहा है। आठ दिनों में लगभग 280 अभ्यर्थियों ने दो से पांच सेकंड के बीच अपना चांस गवांया है। कहा कि उनकी तैयारी बेहतर थी लेकिन समय से चूके गए। बताया कि कई ऐसे युवा भी रहे जो तेजी से दौड़कर रस्सी पार कर गए। बाद में सफल होने की बात कही, सभी को सीसी टीवी दिखाकर संतुष्ट किया गया।

भर्ती निदेशक कर्नल राजेश सिंह ठाकुर ने बताया कि गाजीपुर की कासिमाबाद तहसील से 2401 व मिर्जापुर के चुनार से 1508 व मिर्जापुर सदर से 3247 युवाओं को दौड़ के लिए बुलाया गया था। इनमें 365 अभ्यर्थी सफल हुए हैं।

आज दौड़ेंगे 7037 अभ्यर्थीः छावनी स्थित रणबांकुरे मैदान में शनिवार को मिर्जापुर जिले की लालगंज व मड़िहान तहसील और देवरिया जिले की बरहज, रुद्रपुर व सदर तहसील के 7037 अभ्यर्थी सेना भर्ती रैली में दौड़ लगाने पहुंचेंगे।

21 को दौड़ेंगे अलग-अलग धर्म पंडितः सेना में धर्म शिक्षकों की भर्ती के लिए 29 अक्तूबर तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन हुआ था। 21 नवंबर को सभी धर्म के पंडित सेना भर्ती में 143 पद के लिए दौड़ेंगे।

फुटबॉल प्रतियोगिता में वाराणसी फाइनल में

चम्पावत। वाराणसी की टीम अखिल भारतीय काली कुमाऊं फुटबॉल प्रतियोगिता के फाइनल में पहुंच गई। शुक्रवार को पहले सेमीफाइनल मुकाबले में वाराणसी ने मंथन क्लब दिल्ली को 4-0 से हरा दिया। गोरलचौड़ मैदान में हुए मैच के पहले हाफ में दोनों टीमों ने गोल के कई मौके गंवाए। दूसरे हाफ के 48वें मिनट में वाराणसी के स्ट्राइकर दिलीप तमांग ने गोलकर टीम का खाता खोला। सागर ने 65वें और विक्रम ने 70वें मिनट में गोल कर दिल्ली को बैकफुट में धकेल दिया।

कालाधन खत्म करने पर मंथन कल से

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

कालेधन को खत्म करने सहित कर संबंधी अन्य मुद्दों पर काशी में दो दिवसीय टैक्स क्रांफ्रेंस होने जा रही है। 11 व 12 नवंबर को आयोजित होने वाले सम्मेलन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर नियमों में हुए बदलावों पर चर्चा होगी।

ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिशनर्स (एआईएफटीपी) व इनकम टैक्स बार की ओर से आयोजित सम्मेलन में आयकर, जीएसटी के संबंध में विशेषज्ञ बारीकियां समझाएंगे। व्यापारी-उद्यमी व कर सलाहकार अपनी व्यावहारिक दिक्कतें बताएंगे।

पराड़कर भवन में शुक्रवार को टैक्स कांफ्रेंस की जानकारी देते कांफ्रेंस के चेयरमैन अरविंद शुक्ला व अन्य पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

पहड़िया स्थित कन्हैया विलास में होने वाले सम्मेलन में देशभर से विशेषज्ञ जुटेंगे।

पराड़कर भवन में शुक्रवार को प्रेसवार्ता के दौरान कांफ्रेंस चेयरमैन अरविंद अग्रवाल ने कहा कि कालेधन के मायावी संसार को तोड़ने के लिए विशेषज्ञ मंथन करेंगे। सम्मेलन के मुख्य अतिथि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश विनीत सरन व विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वोच्च न्यायालय व इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश उपस्थित होंगे। इसमें एआईएफटीपी के अध्यक्ष डॉ. अशोक सराफ मौजूद रहेंगे।

इनकम टैक्स बार एसोसिएशन वाराणसी के अध्यक्ष ओपी शुक्ला ने बताया कि सेमिनार की पूर्व संध्या पर शास्त्री घाट पर स्वच्छता सप्ताह कार्यक्रम की शुरुआत भी होगी।

मेघबरन एकेडमी ने बांदा, गोरखपुर, वाराणसी की टीम को हराया, करमपुर पहुंचने पर बच्चों का हुआ भव्य स्वागत

पगडंडियों पर दौड़ने वाले बच्चों ने जीती सब जूनियर हॉकी

उपलब्धि

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

गांव की पगडंडियों पर दौड़ने वाले बच्चों की टीम का राज्य स्तरीय हॉकी टूर्नामेंट जीतने के बाद गाजीपुर के करमपुर पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। मेघबरन सिंह हॉकी एकेडमी ने करमपुर, भदैला, चिलौना, कोरिसा, कन्हीपुर, मढ़िया गांव से निकले गरीब परिवार के होनहार बच्चों की टीम बनाई और उन्हें सब जूनियर हॉकी टूर्नामेंट के लिए तैयार किया।

कप्तान रोमित पाल के नेतृत्व में अंडर-14 की टीम ने न केवल अन्य जिले की टीमों को हराया, बल्कि फाइनल में वाराणसी की विवेक एकेडमी की टीम को 4-1 से हराकर ट्राफी पर कब्जा जमा लिया।

लखनऊ में सब जूनियर हॉकी टूर्नामेंट जीतने वाली मेघबरन हॉकी टीम। • हिन्दुस्तान

लखनऊ में तीन से पांच नवंबर तक आयोजित प्रतियोगिता में इस टीम ने बांदा को 7-0, गोरखपुर को 9-1 से हराया। टीम में विशाल राजभर, शिवानंद प्रजापति, शिवम यादव, कृष्णा बेनवंशी, रोमित पाल, विशाल राजभर, प्र''ाद राजभर, सुजीत राजभर, अमन यादव, आकाश राजभर, प्रदीप बेनवंशी, प्रदीप यादव, अंकित यादव, राघवेंद्र चौहान, अमन यादव, सुनील यादव हैं। कोच रमेश यादव थे।

मेघबरन सिंह हॉकी एकेडमी के संरक्षक तेज बहादुर सिंह और अध्यक्ष पूर्व सांसद राधे मोहन सिंह ने बताया कि गांव के बच्चों में प्रतिभा, ललक और प्रतिस्पर्धा की भावना ज्यादा होती है। उसे आगे लाने की जरूरत है। यहां 25 साल से चल रही निःशुल्क एकेडमी ने देश को राहुल राजभर समेत अन्य खिलाड़ी दिये हैं। ये सभी गांव से निकले हैं। इसी कारण गांवों में खेलों को बढ़ावा देने की जरूरत है।